International Journal of Applied Research 2018; 4(11): 230-233

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(11): 230-233
www.allresearchjournal.com
Received: 15-09-2018
Accepted: 17-10-2018

सुनीता वर्मा
एक्टेंशन लेक्चरर (हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़,
हरियाणा, भारत

Correspondence
सुनीता वर्मा
एक्टेंशन लेक्चरर (हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़,
हरियाणा, भारत

मनीषा कुलश्रेष्ठ कहानी संग्रह 'गन्धर्व – गाथा' राष्ट्रीय एक परिप्रेक्ष्य में

सुनीता वर्मा

संक्षेपिका
वीर रस होता जहाँ श्रृंगार है। देश गौरव की शिथिलता है वहाँ। तात्पर्य यह है कि देश गौरव एवं राष्ट्र भक्ति के लिए श्रृंगार या भोगवादी उपभोक्तावादी संस्कृति से मुक्ति बेहद जरूरी है। भोगवादी संस्कृति पूंजीवादी बाजार का अभिन्न अंग है पूंजीवादी बाजार के निर्माण के कारण राष्ट्रीयताओं एवं राष्ट्र का उदय होता है, सामान्य भाषा, सामान्य संस्कृति और सामान्य बाजार आधुनिक राष्ट्रीयता का आधार है भोगवादी संस्कृति जिस तरह मध्यकाल मे राष्ट्र भक्त बनने से रोकती थी वही दूसरी ओर उपभोक्तावादी संस्कृति का विस्तार नए युग मे राष्ट्रवादी भाव बोध का क्षय करता है, राष्ट्रीयताओं को विखंडित करता और अंधराष्ट्रवाद को पैदा करता है मध्यकाल मे श्रृंगार रस की प्रधानता एवं राष्ट्र भक्ति के अभाव के बीच गहरा रिश्ता था तो आधुनिककाल मे उपभोक्तावाद, अंधराष्ट्रवाद एवं पृथकतावाद के बीच मे गहरा रिश्ता देखा जा सकता है दोनो ही अवस्थाओं मे राष्ट्रबोध का क्षय होता है मध्यकाल मे कवि श्रृंगार रस मे डूबे हुए थे तो आधुनिक काल मे वस्तु भक्त हो गए है। 'गन्धर्व गाथा' कहानी संग्रह मे मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों मे इसी तरह की वस्तु भक्ति व हिन्दू – मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगो जो भारत विभाजन से लेकर आज के आधुनिकीकरण के दौर मे भी देश की राष्ट्रीय एकता व विकास को ध्वस्त कर रहे है का व्याख्यान किया है कोई भी साहित्यकार प्रत्येक युग की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना के उदाहरणों को सामने रखकर ही विश्लेषण के द्वारा अपने युग की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक – सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित होता है।

कुटशब्दः राष्ट्रीयता, लोककला, पितृसतात्मकता, स्वावलंबन, साम्प्रदायिकता, भूमण्डलीकरण इत्यादि

प्रस्तावना
आज दिनो – दिन राष्ट्रीय – मूल्यों का ढांचा चरमराता जा रहा है। राष्ट्रीय मूल्यों के अन्तर्गत देश– सेवा, देश भक्ति, राष्ट्रीय एकता, आदर्श नागरिकता, राष्ट्रीय सम्पक्ष से सरोकार, प्रजातन्त्र, स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुत्व आदि समावेश होता है ये राष्ट्रीय मूल्य हमारे सामाजिक – राजनीतिक मूल्यों मे गहन रूप से सम्पृक्त होने चाहिए। यह एक आदर्श स्थिति है, किन्तु आज राजनीतिक शैलियों को देखते हुए वर्तमान परिवेशमुक्त स्थिति असम्भाव्य लगती है।
ठीक इसी प्रकार की राष्ट्रीय विकास मे बाधक राजनीतिक शैलियां 'गन्धर्व गाथा' कहानी संग्रह की पहली कहानी स्वांग मे देखने को मिलती है स्वांग कहानी का 'गफूरिया' जो अपनी मरती लोककलाओं व विदेशी कालबेलियां नर्तकों द्वारा अपनी 'लोककला' 'बहुरूपिया' को धत्ता बताए जाने पर भी अपनी 'लोककला' जो उसे अपने गुरू अपने उस्ताद से मिली और जो अपनी लोककला के लिए बडे – बडे ठेकेदारों द्वारा मरवा दिए गए को जीवित रखना चाहते है 'राष्ट्रपति पुरस्कार' से सम्मानित अपनी लोककला 'बहुरूपिया' जो समाज के द्वारा ही नही उसके परिवार के द्वारा उपेक्षित है जिसके कारण उनकी बेटी को ससुराल वाले मायके नही भेजते क्योकि वो इस तरह स्त्रियों की 'कॉस्टूम' पहनकर 'ड्रामा' करते है। परन्तु गफूरिया इन सब की परवाह ना करके अपनी 'लोककला' की रक्षा व उसे जीवित रखता है और अपने देश की सभ्यता व संस्कृति का सम्मान भी करता है।
इसी प्रकार 'कालिन्दी' कहानी की 'जमना' एक न्यूड मॉडल है जो उन बदनाम गलियों मे रहती है जहाँ बच्चो को भी 'कस्टमर' शब्द का अर्थ पता है। ''बम्बई – पुलिस और निगरानी प्रकोष्ठ शाखा के रिकार्ड के अनुसार, पिछले छह बरसों मे 469 वेश्यालयों के मालिक पकड़े गए, पर उनमे से कुल दो दंडित हुए। इनमे से एक भी दलाल या गृहस्वामी नही था। दूसरी तरफ, इसी अरसे मे 4139 वेश्याएँ वेश्यावृत्ति निरोधक कानून (सीता) के खंड 8 (बी) के अन्तर्गत और 44,663 बम्बई – पुलिस कानून के खंड 110 के अन्तर्गत पकड़ी गई। इनमे से हर एक को दंडित किया गया।

यानी मजबूरी मे शरीर बेचना तो कानूनन जुर्म है, पर इस बिक्री को स्वेच्छा से बढ़ावा देना या इसे अपनी छत के लिए (किराया और प्रतिशत वसूल कर) पनपाना नही। क्या वेश्यावृत्ति ऐसा अपराध है, जिसमें दंड की भागी सिर्फ वेश्या हो, जो अकसर अनिच्छा से यह काम करती है, वह पुरूष नही, जो सदा स्वेच्छा से उसका शरीर खरीदता है? कुछ कमी तो, दरअसल, 1956 के वेश्यावृत्ति निरोधक कानून मे ही थी। मूलतः यह कानून वेश्यावृति को मिटाने का प्रयास नही करता, बल्कि सिर्फ चकला घर चलाने या उसके लिए किराए पर देने अथवा वेश्या के लिए दलाली करने को जुर्म की संज्ञा दे देता है। फलस्वरूप, न तो यह स्वेच्छा से या अकेले वेश्यावृत्ति करने पर कोई पाबन्दी लगा पाता या और न ही इस व्यापार की जड़ – यानी खरीदार पर।''[1]

आज जरूरत है कि वेश्याओं को खूंखार पशुओं की तरह हर प्रकार की प्रताडना के योग्य मानने के बजाय, उन्हे पितृसत्तात्मक समाज – व्यवस्था के सामाजिक और आर्थिक असन्तुलनों से निकले शोषण का शिकार समझा जाए। उनकी स्थिति तथा समस्याओं को जाँचने तथा हल करने के लिए सामाजिक कल्याण– कार्यो से जुड़े नागरिकों, वकीलों तथा स्त्री – कल्याण संस्थाओं की महिला कार्यकर्त्ताओं की हर राज्य मे समितियाँ बनाई जाएँ। इन समितियों को तफतीश करने, रिपोर्ट करने, छापे डालने, गिरफ्तारियाँ कराने तथा सजा दिलवाने का अधिकार हो, जिसमे उन्हे पुलिस भी मदद दे।

मेरा ईश्वर यानि ..... कहानी की भी यही स्थिति है अपने वजूद की पहचान मे अर्न्तद्वंद्व से गुजरती युवती की कहानी है इस कहानी मे लेखिका ने प्रेम और शरीर से पार पाते हुए जीवन के मायने खोजने का संघर्ष यहाँ मुखर हुआ है।

आधुनिक कथा साहित्य के नारी चरित्रों मे शिक्षा और आर्थिक स्वावलम्बन के साथ – साथ नारी की अपने अस्तित्व के प्रति सजगता बढ़ी है और वह अपने अस्तित्व की कीमत पर परिवार को बचाने मे विश्वास नही करती, पर अस्मिता की यह ललक और स्वतन्त्रता की चाह कई बार स्वच्छन्दता और उच्छृंखलता बनकर विकृति के रूप मे सामने आ गई है। नारी की स्थितियों मनोभावों और प्रवृत्तियों मे आनेवाला अन्तर संयुक्त परिवारों की टूटन तक ही सीमित नही रहा वरन दाम्पत्य को विघटन के कगार पर लाकर तनाव व कुंठा जैसी विकृतियों को जन्म देता है। हिन्दी कथा साहित्य मे पारिवारिक विघटन की स्थितियों का जो चित्रण हुआ है, उसका केवल स्त्री की स्वच्छन्दता ही नही बल्कि पुरूष की अहंवादी या सामन्तवादी प्रवृत्ति भी इसके लिए जिम्मेदार है।

नारी के मन मे अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की कामना है इसका मूलकरण पुरूष है उसने अनावश्यक ढंग से जान – बूझकर उसे सीमाओं मे बांध रखा है। उसके मन के किसी कोने मे इस बात का भय भी है कि, नारी का स्वतन्त्र अस्तित्व कही उसके अंहकार के सर्वनाश का कारण न बन जाए। हमारे समाज की पितृसता व्यवस्था ही कुछ ऐसी रही है कि पुरूष स्वामित्व भाव को स्वीकार कर नारी पर आधिपत्य बनाये रखे। अतएव इस परम्परागत भावना के अधीन हो पुरूष ने नारी पर अपना पूर्ण स्वामित्व भाव को अपना भाग्य मान उसके सारे अच्छे – बुरे विचारों एवं व्यवहारों को बर्दाश्त करती आ रही है।

कुछ कहानियां उतर – आधुनिक युग की स्त्री से जुड़े सवाल उठाती है फिर चाहे वो 'मेरा ईश्वर यानी' ..... कहानी हो या 'परजीवी' कहानी जिसमे स्त्री – पुरूष एक अलग धरातल पर आपसी सम्बन्धों का बोध कराते है। लेखिका ने मेरा ईश्वर यानि ..... कहानी मे ''पिकासो' स्पेन के एक महान चित्रकार का वर्णन किया है पाब्ले पिकासों बीसवीं सदी के सबसे अधिक चर्चित विवादास्पद और समृद्ध कलाकार थे उन्होने तीक्ष्ण रेखाओं का प्रयोग करके घनवाद को जन्म दिया था पिकासो की कलाकृत्ति मानव वेदना का जीवित दस्तावेज है''[2] मेरा ईश्वर यानि ..... कहानी के नायक की तरह ही पाब्लों पिकासों को अलग – अलग प्रेमिकाएं रखने और फिर उनके गुणों – अवगुणों को जाँचने परखनें मे दिलचस्पी थी। ठीक इसी प्रकार की स्थिति मेरा ईश्वर यानि ..... कहानी की नायिका की है।

'एडोनिस का रक्त और लीलि के फूल' कहानी मे तत्कालीन युग प्रतिबिम्बित है मेजर, लेफ्टिनेंट और भारतीय सैनिकों के युद्ध की अनुभूति अत्यन्त सजीव रूप मे इस कहानी मे मुखरित हुई है। घायल होने पर भी लेफ्टिनेंट का युद्ध मे जाने की जिद करना तथा अपनी प्रेमिका व नर्स अम्बिका को ये कहना कि ''एक सैनिक के पास खाने को दो ही चीज होती है, प्रेम और जान। वन इन द वार, लास्ट इन द लव। फिर चाहे वो दूसरे विश्वयुद्ध के सैनिक हो या इराक अमेरिकी सैनिक''[3] यह कहावत यू ही तो नही बनी। यह कहानी मेजर लेफ्टिनेंट व भारतीय वीर सैनिकों की देश के प्रति कर्तव्य भावना को दर्शाती है जिसमें अनेक लोग मारे तथा कई लोग घायल हो गए।

'परजीवी' कहानी मे नायक की पत्नी का घर छोडकर चले जाना और नायक का किसी ऐसी लड़की को पसन्द करना और ये कहना कि तुम एक खूबसूरत लड़की हो हालांकि वो ना तो खूबसूरत होती है और न ही वो उसे पसन्द करता है। एक खूबसूरत पत्नी की नफ़ासत, नज़ाकत से तंग वो मुहाँसो भरे चेहरे और पीले दाँत वाली लड़की को इसलिए चुनता है। कि शायद उसके नाज और नखरे नही उठाने पड़ेगे।

कहानी मे लेखिका ने नायक के द्वारा स्त्री को हर लहजे मे रखना, अपने अनुसार उसका उपभोग करना खरा ना उतरने पर तिरस्कृत करना अर्थात एक स्त्री का अपना ही वजूद खतरे के निशान पर रखने वाली पितृसत्तात्मक व्यवस्था के ढांचे का वर्णन किया है।

''मान्यता है कि इंसान होने की पहली पहचान है किसी राज्य का नागरिक होना। तब क्या मानवाधिकार का सबसे सुरक्षित गढ़ राष्ट्रवाद है? क्या राष्ट्र की आलोचना करने वाला देशभक्त नही हो सकता। स्त्री के अधिकारों की चर्चा करने पर पूछा जाता है कि वह किस राष्ट्र की नागरिक है? उसका धर्म, जाति उसका सम्प्रदाय क्या है? इन सवालों का जवाब यह है कि नारीवाद को राष्ट्रीय सीमा मे बन्द नही किया जा सकता। स्त्री स्थानीय संघर्ष कर रही है भूमंडलीय स्तर पर भी वह संघर्षरत होगी, एक समग्र दृष्टिकोण अपनायेगी। एक ओर यदि स्थानीय परम्परा सापेक्षिक नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक विरासत की समस्या है तो दूसरी ओर स्त्री को संस्कृतियों की सीमाओं के पार छानबीन और अन्वेषण करना होगा ताकि उसके आलोचनात्मक रूख से एक ऐसा वैश्विक दृष्टिकोण विकसित हो सके जिसके जरिये अपनी छद्म चेतना को बदलने मे वह सक्षम हो सके''[4] जैसा की 'परजीवी' कहानी मे नायक की प्रेमिका के द्वारा किया गया जैसी ही वो उसकी स्त्री के लिए चिन्हित की गई स्थानीय परम्परा सापेक्षिक नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक शैलियां जो उसने खुद बनाई उनकी उपेक्षा करके उसको छोड़कर चली जाती है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी 'खरपतवार' मल्टी नेशनल कम्पनी मे काम करने वाले एक शादीशुदा व्यक्ति का एक अनजान सी लड़की से शारीरिक सम्बन्ध, गर्भपात और बाद मे सम्भोग के वक्त लड़की की मौत की अखबारीपन से युक्त सनसनीखेज कहानी है शराब के नशे मे जिस्मानी सम्बन्धों से होते हुए भावनात्मक जुड़ाव तक की यात्रा मे उतर आधुनिक समाज के स्त्री – पुरूष संबंधो का अनुसंधान करती ये कहानी हमारे समाज की नव उदारवादी व्यवस्था से अपने संक्रमण काल मे सम्बन्धों का व्याख्यायित करने का प्रयास है 'खरपतवार' एक सामान्य से कथानक पर आधारित है लड़की की मौत के बाद 'डैन' का कोई भी जवाबदेही ना होना एक तरह से ''पितृसत्तात्मक व्यवस्था की स्त्रियों द्वारा की जाने वाली संरचनात्मक पड़ताल है। पुरूष – स्त्री तथा बच्चों को आसरा देने वाली परिवार – संस्था, मानवीय सभ्यता की एक ऐसी बुनियादी इकाई है, जिसका कोई विकल्प नही। पर इस ईकाई के भीतरी शक्ति – समीकरण, जो अन्ततः पूरे राष्ट्र का

आर्थिक – सामाजिक परिदृश्य तैयार करते है, अपने यहाँ तमाम बदलावों के बावजूद सदियों से वे ही रहे आए है।

इससे अतिरिक्त अहित औरतों का ही हुआ है और पुरूषों के लिए कामयाबी का मॉडल रहा, जबकि स्त्रियों के लिए निष्क्रिय सहचरी का स्वरूप उत्तम माना गया। क्या फिर इन दोनो के रिश्ते मे प्यार की जगह बच सकती है? यह अपने ही यहाँ नही, दुनिया भर मे हुआ है।''[5]

प्रसिद्ध अभिनेत्री – लेखिका 'शर्ली मैक्लेन' के शब्द सारी दुनिया भर मे बिखरी सच्चाई की प्रतिध्वनि लिये है।, ''आज हम यह नही जानती कि प्यार करना होता है। हम सिर्फ डरना जानती है और यह डर एक छुतहा बिमारी है। अत्याचार का असहाय शिकार बनने के लिए औरतों मे कही एक हवस – स्त्री बन गई है, जो उतनी ही गहरी है जितनी की पुरूषों की ताकत की हवस। इन दोनो लतों को छोडना उतना ही तकलीफ देह होता है, जितना मादक द्रव्यों के नशे की लत को छोडना। पर जब हम अपनी आत्मा की पूरी ताकत लगाकर यह समझ पाते है तो अचानक हमे दुखों के बीच एक राह नजर आने लगती है।''[6]

साहित्य का मनुष्य से शाश्वत संबंध है साहित्य सामुदायिक विकास मे सहायक होता है और सामुदायिक भावना राष्ट्रीय चेतना का अंग है समाज का राष्ट्र से बहुत गहरा और सीधा संबंध है संस्कारित समाज की अपनी एक विशिष्ट जीवन शैली होती है जिसका संबंध सीधा राष्ट्र से होता है जो इस रूप मे सीधे समाज को प्रभावित करती है कवियों ने राष्ट्र को जागृत करने के लिये, सोये हुए राष्ट्र को अपनी कविताओं के माध्यम से संघर्ष के लिये प्रेरित किया। भक्त कवियों ने अपने अंतःकरण मे बह रही राष्ट्रीय चेतना की धारा से सुप्त और निराश्रित सामज को नयी दिशा दी। मनीषा कुलश्रेष्ठ भी ऐसी ही राष्ट्रीय चेतना की पक्षपाती रही है।

'बिगडैल बच्चे' युवा पाठकों की प्रिय कहानी है इस कहानी मे लेखिका ने रेल सफर मे तीन तरूण यात्रियों की बातचीत पहनावा और बेफ्रीकी सहयात्रियों को परेशान करती है जब कथावाचक प्रौढ महिला जो उन तीनो तरूण यात्रियों को 'बिगडैल', गैरजिम्मेदारी, असभ्य जैसे कथनों से चिन्हित करती है और एक स्टेशन पर उस प्रौढ़ महिला को जब ट्रेन मे चढ़ते समय चोट लगती है तब आत्मकेन्द्रित मध्यवर्गीय मानसिकता केवल तमाशा देखती है वहाँ वो कम उम्र भटके हुए, असभ्य गैर जिम्मेदारी युवा ही उस प्रौढ़ महिला की सलामती के लिए अपना सब कुछ एक ओर छोड़ देते है तो ऐसा नही कि हमारी युवा पीढ़ी देश के विकास मे या मानवता की सेवा और करूणा को नही समझती अपितु हमारे देश के प्रौढ़ व बुजुर्गो को नई पीढ़ी को नई सोच के साथ स्वीकार करना होगा तभी देश का विकास सम्भव है क्योकि आधुनिकता परम्परा का विरोध नही है अपितु समय के साथ परिवर्तन से ही नई पीढ़ी के लोगों मे, युवाओं मे राष्ट्रीय जीवन मूल्यों के प्रति चेतना लाई जा सकती है।

''राष्ट्रवाद के दायरे मे स्त्री अपनी तमाम विशिष्टताओं के बावजूद 'हम लोग' 'हमारी संस्कृति' 'हमारी जाति' और 'हमारा भारतवर्ष' जैसी समग्रता का हिस्सा हो जाती है उस वक्त वह यह सवाल करना भूल जाती है कि इस समग्रता मे वह कहाँ और किस स्थिति मे है?

क्या अब भी अपने बारे मे बोलने और सोचने का वह हक रखती है? क्या यह साम्प्रदायिक – जातीय सोच इस बात का भी ध्यान रखता है कि स्त्री अस्मिता, अधिकार, आन्दोलन की अलग आवाज को इतिहास मे पीछे न ढकेल दिया जाए, विस्मृत न कर दिया जाए, जिन अधिकारों को उसने हासिल किया है, जिस स्वतन्त्रता के अँखुए बस अभी – अभी जमीन फोड़कर हँसते – खिलखिलाते हुए निकले है, जिन अँधरी जड़ो का अवलोकन करना उसने बस अभी – अभी सीखा है क्या उन सारी उपलब्धियों को पारिवारिक, जातीय, राष्ट्रीय संकट के नाम पर कुर्बान कर दिया जाए? स्त्री पीछे छूट जाए, उसकी समस्याएँ, उसके आन्दोलन, उसकी उपलब्धियों का सारा ब्यौरा, वहीं का वहीं धरा रह जाए। भला सत्ता को दमन का इससे अधिक सुख और क्या मिलेगा कि दुश्मन खत्म हो जाए और सता अपराधी भी न कहलाए। समाज को धवल स्वच्छ रखने के अभियान मे वह गौरव यात्रा करे, उसके रथों के पहिए अनवरत चलते रहे और स्त्री, उसका घर और उसके बच्चे धूल होते रहे। स्त्री जब अपना स्त्री होना भूल जाती है, तब वह दूसरी, स्त्री का हक भी भूल जाती है मगर जरा गौर से इस तर्क पर ध्यान दीजिए – गोधरा ट्रेन मे जब कोई हिन्दू स्त्री मर रही थी, तब वह स्त्री पहले थी और हिन्दू बाद मे। व्यक्ति – स्त्री के अस्तित्व का सवाल पहले है और उसका धर्म और जाति बाद मे। यहाँ स्त्री के कारण वह उत्पीड़ित, शोषित, हिंसा की शिकार है और आततायी पुरूष है। यह पुरूष – तन्त्र है, उसकी सत्ता जो अपना नाम, धर्म और जाति बदलता रहता है मगर हमेशा उसके पास सत्ता रहती है, ताकत रहती है, हथियार रहते है जिसका उपयोग वह अधीनस्थ स्त्री के खिलाफ करता है।''[7]

'कुरजां' कहानी की नायिका भी इसी तरह उत्पीड़ित, शोषित, हिंसा की शिकार है कैसे धार्मिक रूढ़ियो, अन्धविश्वासों के कारण गावों से बाहर अलग जंगल मे अपने मासूम बच्चे के साथ संघर्ष करना पड़ता है उसे डायन समझ कर उसके बच्चे को स्कूल मे दाखिला देने से भी इनकार कर दिया जाता है। राष्ट्र के विकास मे मौलिक रूप से स्त्री को विशेषकर कुरजां जैसी स्त्री को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए पहले अपने आप को मानसिक व शारीरिक रूप से मुक्त कराना होगा। अपने देश मे जो लोग विश्व के दैहिक – दैविक – भौतिक तापों का कारण स्त्री को मानते है, जिनका दृढ़ मत है कि ''स्त्री का जन्म ही सृष्टि को पथभ्रमित करने को हुआ है और जो कन्या के जन्म को परिवार के लिए कुर्की की डिग्री से कम नही मानते, उन्हे यह जानकर शायद हर्ष है कि अपने भारत देश मे स्त्रियों की तादात सचमुच घट चली है और यह तथ्य एक सुनी – सुनाई बात नही, सयुक्त राष्ट्र संघ के बाल – शिक्षा एवं कल्याण – संगठन की नवीनतम रपट मे दर्ज किया गया है।

दुनिया के तमाम विकसित और अविकसित मूल्कों मे 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' वाला अपना प्यारा हिन्दोस्ताँ ही है, जिसने अपनी आबादी की बीहड़ बढ़ोतरी के बावजूद 1901 मे उस लिंग – आधारित अनुपात को, जिसके अनुसार देश मे ही 1000 पुरूषों के पीछे 972 स्त्रियाँ थी, घटकर 1000 पुरूषों के पीछे 935 स्त्रियों मे तब्दील कर दिया है। यह उल्लेखनीय है कि प्राकृतिक नियमों के अनुसार अपने देश मे भी, अन्य देशो की तरह मूल जन्म – दर मे लड़को तथा लड़कियों का प्रतिशत बराबर होता है। पर लड़की के जन्म के साथ ही जो धिक् – धिक् का भारतीय सिलसिला उसके साथ शुरू हो जाता है। उसके चलते जो लड़कियाँ बचपन किसी तरह गुजार भी लेती है।

उनमे से अनेक 15 से 29 वर्ष की आयु के बीच कुपोषण, निरन्तर जचगियों, पारिवारिक अवहेलना और स्वयं के कष्टों को छिपाकर रखने की (बहुप्रशंसित) प्रवृत्तिवश, दुनिया छोडने को बाध्य होती है।''[8]

अखबारों मे एक खबर थी कि देश की राजधानी मे एक युवती माता ने दोबारा कन्या पैदा होने के दुख से आत्महत्या कर ली। यानी अपने देश मे स्त्री के लिए खुद का स्त्री होना तो ग्लानिजनक बना ही दिया गया है, एक कन्या को जन्म देना तो मानों एक अक्षम्य दोष हो जाता है ऐसा क्यों है? अन्तर्राष्ट्रीय महिला दशक अब लगभग खत्म होने को आया है, और इन दस वर्षो मे स्त्रियों की स्थिति को लेकर हजारों की तादाद मे गोष्ठियाँ हुई, पर्चे पढ़े गए, नारे लगे और अनुदान वितरित हुए। पर इसके बावजूद बलात्कार छेड़छाड, दहेज की खातिर बहुओं की हत्या की घटनाओं मे कही भी तो कमी नही आई। कमी आई तो स्त्रियों की तादाद मे। 'न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी' दरअसल अपने यहाँ समाज के शक्ति – सन्तुलन और स्त्रियों को

लेकर जो मूल अवधाराणाएँ है, भारी गड़बड़ कही उन्ही मे है यहाँ यह कहना जरूरी है कि बडे पैमाने पर भारत के स्वतन्त्रता – संघर्ष मे औरतो की भागीदारी भी एक 'फ्रीक' या असामान्य काल खण्ड की घटना से बढ़कर नही। ठीक इसी तरह की अवधारणाएं 'फांस' कहानी मे लेखिका ने दर्शायी है अंतिमा का चौथी कन्या के रूप मे जन्म लेना, पिता का जन्म के साथ ये कहना कि इन तीनों का विवाह तो जैसे – तैसे पैसे उठाकर कर दिया पर अब चौथी कन्या के लिए पैसे उधार लेना उसके बस मे नही है। माँ का लम्बी बिमारी से मर जाना अंतिमा का अपने पिता द्वारा बलात्कार और जयदीप जो उसके बचपन का दोस्त बाद मे साथी बन चले रिश्ते का दावेदार अंतिमा की कहानी को सुनकर उससे अपना हर रिश्ता तोड़ अपनी नौकरी पर चला गया है कहानी मे मनीषा जी ने अंतिमा जैसी लड़कियां जो अपने ही पारिवारिक रिश्तों का शिकार होती है एक मार्मिक कथा है।

यह एक भ्रान्ति है कि आत्म निर्भर स्त्री के मन मे घर परिवार के लिए प्यार या चिन्ता नही। ठोस उदाहरण यदि हम देखे, तो पाएँगे कि स्त्री का सहज धैर्य और प्रेम की क्षमता अन्त तक उसके टूटते हुए को बचाए रखने को प्रेरित करते है अपने यहाँ घर और रिश्ते जब टूटते है, तो वे बरसों से चले आ रहे अन्याय के बोझ से टूटते है, स्त्री मे विकसित मुक्ति – भावना से नही। स्वाभिमानी, स्पष्ट वक्ता और आत्मनिर्भर बनती हुई स्त्री से डरने या घृणा करने के बजाय, माँ – पत्नी – प्रेमिका – पुत्री के रूपों मे अब तक स्त्रियों की अत्यधिक अलंकरण प्रियता, आत्म ग्रस्तता, चिड चिडेपन, ईर्ष्यालुता या कलह प्रियता से भिन्न पुरूषों को यह याद रखना चाहिए कि स्त्रियाँ यदि पारम्परिक रूढ़िवादी स्त्रीत्व (यानी स्त्री एक विशुद्ध देह है या स्त्री महज सौन्दर्य है, या स्त्री केवल कोख है आदि जैसी धारणाओं) को पीछे छोड़कर, अपना 'स्व', महज़ शारीरिक सौन्दर्य कामुक्ता अथवा मातृत्व के असहज दमघोंटू रूपो के परे अपनी पूरी मानवता के सन्दर्भों मे खोजेंगी, तो अपने साथ – साथ वे अपने से जुडे तमाम पुरूषों को भी तो कही गहरे नैराश्य, तनाव और ऊब से मुक्त करती जाएँगी।

जैसा कि 'स्यामीज' कहानी मे 'मानसी' व 'रूपसी' जो 'बुद्धिमता' तथा सौन्दर्य जैसी आत्मगत विश्लेषण को लेकर असमंजस मे है लेकिन आत्मनिर्भरता स्त्री को ही नही सम्पूर्ण राष्ट्र को मानवता के विकास के साथ उन्न्तशील मार्ग पर प्रशस्त कर सकती है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ के कहानी संग्रह की अन्तिम कहानी 'गन्धर्व गाथा' मे दिखाया गया है एक ऐसा ''स्त्री – पुरूष का अनकहा अद्भूत अनोखा प्रेम जो स्त्री तथा पुरूष के बीच 'में' तथा 'तुम' पने के उभय पक्षीय तथा पुरक आदान – प्रदान की इस लचीली मानवीय सम्भावना के स्थापित होने से, न तो जैसा कईयों के मन मे भय है – प्रेम नष्ट होगा, न मानव – मन की स्वप्नदर्शी कोमलता, न स्त्री – पुरूष की एक – दूसरे के प्रति सहज इच्छा मिटेगी, न ही समर्पण का सुख और जो क्रिया पद स्त्री – पुरूष की सुघनतम और प्रियतम भावनाओं को अभिव्यक्त करते है – जुड़ना, जीतना खींचना, रूठना, देना, समर्पित होना, खिझाना, रिझाना – वे भी अपना पूरा अर्थ पाकर सार्थक हो उठेगें।''[9]

प्रेम अगर स्त्री – पुरूष के मध्य जहाँ दोनो अपनी शालीनता से अपने अनकहे अनोखे प्रेम की अभिव्यक्ति प्रदान करते है तो स्त्री – पुरूष का ये प्रेम केवल समाज के विकास मे ही नही राष्ट्र की सभ्यता व संस्कृति के विकास मे भी शीर्ष स्थान को प्राप्त कर सकता है जिसे मनीषा कुलश्रेष्ठ ने पूरी तरह से 'गन्धर्व गाथा' कहानी मे व्याख्यायित किया है।

उपसंहार

राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति मनीषा के विचारों का अध्ययन कर लेने के उपरान्त हम कह सकते है कि मनीषा आधुनिक युग की राष्ट्रीय चिन्तनधारा से पूरी तरह जुड़ी हुई है और उन्होने सम्पूर्ण राष्ट्रीय परिपेक्ष्य को दृष्टि मे रख कर साहित्य की रचना की वे भारतीय जनता की दीनता का प्रमुख कारण राजनीतिक नेताओं, सरकारी कर्मचारियों की स्वार्थप्रियता को मानती है। इस प्रकार मनीषा कुलश्रेष्ठ राष्ट्रीय चेतना के प्रति सजग कथाकार के रूप मे जानी जाती है।

नारी – स्वातन्त्र्य के सही समर्थकों की इच्छा अन्ततः यही है कि स्त्री के अस्तित्व को उसके पुरूष से जुड़े सम्बन्धों तक ही सामित करके न देखा जाए, बल्कि पुरूष की ही तरह उसे भी मानवता का एक भिन्न तथा अनिवार्य और पूरक तत्व माना जाए और उसे जन्मजात अनुचरी नही, सच्चे अर्थो मे सहचरी के रूप मे प्रेरित, परिभाषित और प्रोत्साहित किया जाए। यह मानना गलत है कि स्त्री – पुरूष समता की यह अवधारणा मूलतः पश्चिमी और अभारतीय है दरअसल हमारे पारम्परिक ग्रन्थों ने स्त्री – पुरूष के इस अद्भूत द्वैत को जिस सुन्दरता से पकड़ा तथा व्यक्त किया है, उसकी मिसाल कठिन है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मृणाल पाण्ड़े स्त्री : देह की राजनीति से देश की
2. राजनीति तक, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 1987, दूसरा संस्करण : 2002, तीसरा संस्करण : 2011, पृष्ठ – 100, 102
3. स्त्रोतः Palbo Picasso Biography in hindi Hindi.wedbunia.com……
4. मनीषा कुलश्रेष्ठ 'गन्धर्व – गाथा', सामयिक प्रकाशन 3320 – 21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, प्र० संस्कार – 2012, पृष्ठ – 64
5. प्रभा खेतान उपनिवेश मे स्त्री (मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2003, पृष्ठ – 16
6. प्रभा खेतान उपनिवेश मे स्त्री (मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2003, पृष्ठ – 17
7. शशिकला राय इस्पात मे ढलती स्त्री (स्त्री विमर्श), प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2011, पृष्ठ – 91
8. रोहिणी अग्रवाल साहित्य की जमीन और स्त्री – मन के उच्छ्वास, वाणि प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, प्र० संस्करण : 2014, पृष्ठ – 41
9. मृणाल पाण्ड़े स्त्री : देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 1987, दूसरा संस्करण : 2002, तीसरा संस्करण : 2011, पृष्ठ – 43–44
10. मृणाल पाण्ड़े स्त्री : देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 1987, दूसरा संस्करण : 2002, तीसरा संस्करण : 2011, पृष्ठ – 22